National Policy of Education - 1986
राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 1986

Irshad Ahmad

Introduction – किसी भी राष्ट्र के निर्माण में और उसके विकास में शिक्षा नीति अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। हमारे राष्ट्र में हर एक शासन काल में शासकों ने अपने आदेश व दर्शन पर आधारित शिक्षा नीति का निर्माण किया है। शिक्षा ही एक मात्र साधन है, जो हमें एक आदर्श नागरिक बनाने में सहायता करती है। शिक्षा हमें ऐसा बना देती है, जिससे हम स्वंय कि आवश्यकताओं कि पुर्ति करते हुए स्वंय को समाज में स्थापित कर सके। अतः हर काल से शिक्षा नीति का महत्व रहा है।

* **History of National Policy of Education (राष्ट्रीय शिक्षा नीति का इतिहास):-**

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद राष्ट्रीय भावना विकसित रखने के लिए सरकार ने National Education की आवश्यकता समझी। जनवरी 1985 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी ने यह घोषणा कि थी, कि एक New Edu. Policy तैयार कि जाएगी। AUG 1985 में भारत सरकार ने एक दस्तावेज/पत्र Challenge of Education : A Policy – Perspective Parliament और देश कि जनता के सामने रखा। 1 MAY, 1986 को भारत सरकार ने 19 पृष्ठों के अंग्रेजी में छापे दस्तावेज National Policy of Education - 1986 को जारी कर दिया। मानव संसाधन विकास मंत्रालय [Ministry of Human Resource Development (MHRD)] ने New Edu. Policy को सुचारू रूप से लागु करने के लिए Programme of action 1987 भी तैयार किया है।

* **Salient features of National Policy of Edu. 1986 (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 कि मुख्य विशेषताएँ):-**

1. Education for equality [समानता के लिए शिक्षा]
2. Women Education [नारी शिक्षा]
3. Education for scheduled caste [अनुसूचित जाति के लिए शिक्षा]
4. Education for Schedule Tribes [अनुसूचीत जनजाति के लिए शिक्षा]
5. Education for backword Classes [पिछड़े वर्ग के लिए शिक्षा]
6. Education for Adults [व्यस्कों के लिए शिक्षा]
7. Navoday Vidyalaya (नवोदय विद्यालय कि स्थापना)
8. Examination System [परीक्षा प्रणाली]

Q. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 से आप क्या समझते हैं, इसके तत्वों/विशेषताओं कि व्याख्या करें।
OR Q. ,, ,, ,, के इतिहास पर प्रकाश डाले एवं इसके मुख्य बिन्दु की
OR Q. स्वतंत्रता बाद भारत कि शिक्षा व्यवस्था को व्यवस्थित रूप से संचालन के लिए कौन कौन सी नीति बनाई गयी विवेचना करें।

Scanned with CamScanner

2.

1. **समानता के लिए शिक्षा :-** देश के हर एक नागरिक को बिना भेदभाव के समान रूप से शिक्षा उपलब्ध होनी चाहिए, और सभी को एक ऐसी शिक्षा मिलनी चाहिए जिससे कि सफलता के समान अवसर सभी को मिल सके।

2. **नारी शिक्षा :-** कहा जाता है कि माँ बच्चे कि पहली पाठशाला होती है। जब माँ अर्थात् नारी शिक्षित होगी तो संपूर्ण समाज को शिक्षा मिलेगी। नारीयों की अशिक्षा दूर करने के लिए सहायक सेवाए और मॉनीटरिंग कि जायेगी। सहायक सेवा के अंतर्गत Child care centre की स्थापना की जायेगी।

3. **अनुसूचित जाति के लिए शिक्षा :-** नयी शिक्षानीति में अनुसूचित जातियों की शिक्षा का विकास कर उन्हें अन्य जातियों के समान शिक्षित करना है। इसके लिए छात्रवृति/Scholarship अध्यापकों की नियुक्ति, स्कुलों का प्रबंध, आँगनबाड़ी सेवाए और Adult education centre आदी की स्थापना की जानी चाहिए।

4. **अनुसूचित जन जातियों के लिए शिक्षा :-** अनुसूचित जातियों की तरह ही अनुसूचित जन जातियों के शिक्षा का भी विकास होना चाहिए। इसके लिए भी वही सब प्रबंध करने कि आवश्यकता है, जो अनुसूचित जातियों के लिए होगें। इसके लिए विकास संबंधी नयी-नयी योजनाए बनायी जाए एवं उसे लागु कीकरना चाहिए।

5. **पिछड़े वर्ग के लिए शिक्षा :-** हमारे देश की ग्रामीण जनता शिक्षा के मामले पिछड़ी है। पिछड़े वर्ग के लिए साधनों कि कमी के कारण शिक्षा ग्रहण करने में असमर्थ होते है। इसके लिए ग्रामिण क्षेत्र में Vocational (व्यवसायिक) & Technology (तकनिकी) education पर विशेष बल दिया जाए।

6. **व्यस्कों के लिए शिक्षा :-** हमारे देश में आज भी बहोत सारे जनसंख्या निरक्षर है, अतः ग्रामीण तथा नगरीय क्षेत्र में प्रौढ़ो/व्यस्कों कि शिक्षा पर भी बल दिया जाना चाहिए तथा इसके लिए एक विशेष प्रकार का पाठ्यक्रम का निर्माण होना चाहिए।

7. **नवोदय विद्यालय कि स्थापना :-** देश भर में मेधावी छात्रों के लिए नवोदय विद्यालय खोले जाए। जिनके छात्र - छात्रावास में ही रहेंगें। यह विद्यालय केंद्रीय विद्यालय से अलग होगा।

8. **परीक्षा प्रणाली :-** इ परीक्षा प्रणाली में सुधार कर अंकों के स्थानपर Grade का प्रयोग किया जाए। और किसी को भी फेल न होने दिया जाए।

Scanned with CamScanner

* Recognition of Education at different stage:- (विभिन्न स्तरों पर शिक्षा की मान्यता)

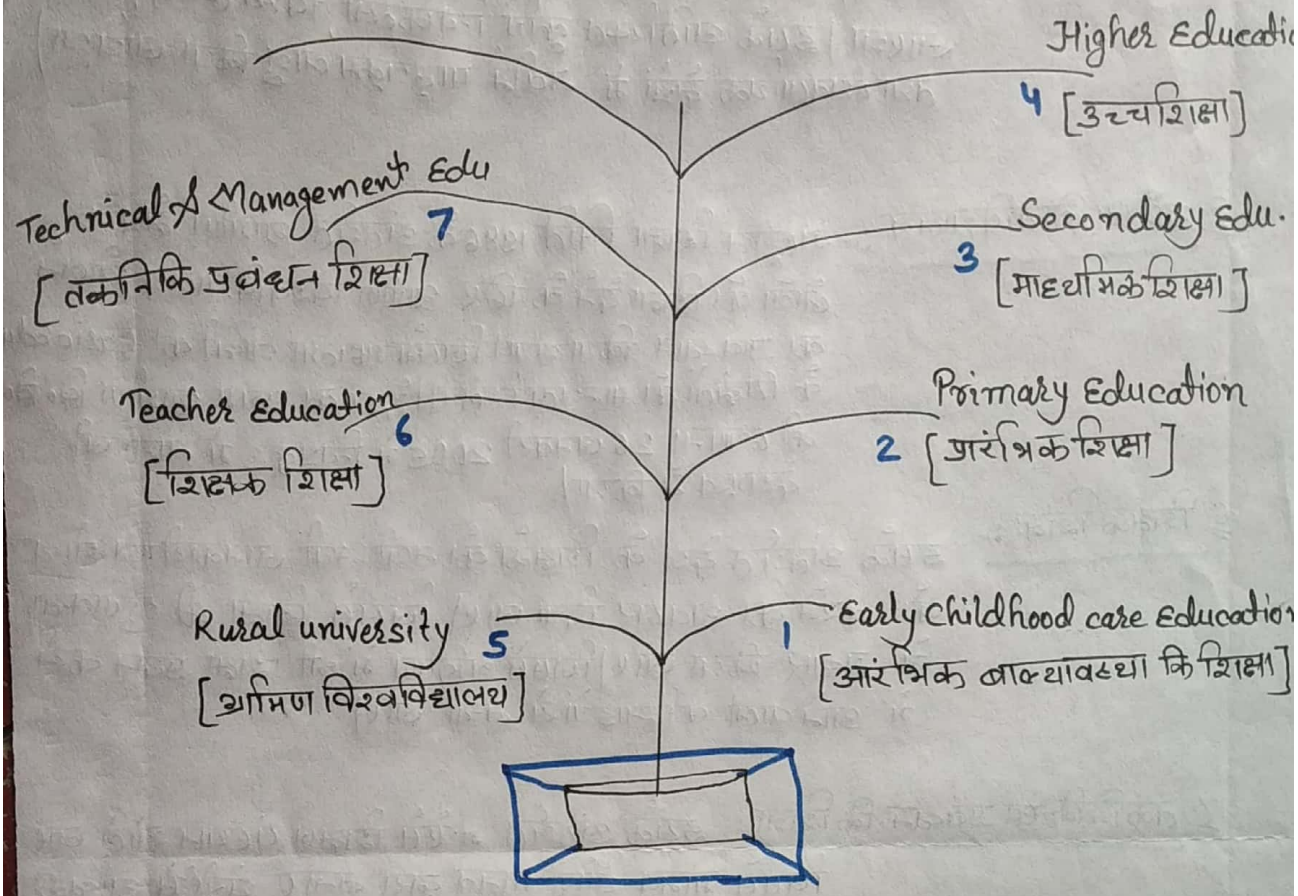

1. **आरंभिक बाल्यावस्था कि शिक्षा :-** यह अवस्था अतिमहत्वपूर्ण अवस्था है। इस अवस्था बच्चों को उचित पोषण स्वस्थशिक्षा, सामाजिक, मानसि तथा नैतिक आदि सारे development की आवश्यकत होती है। इस अवस्था में बच्चे का हर प्रकार का विकास किया जाता है। जिससे वह एक आदर्श सम्प्र प्राणी बन सके।

2. **प्रारंभिक शिक्षा :-** प्रारंभिक शिक्षा अथवा Primar education इस अवस्था में बालकों पर और अधिक ध्यान रखा जाता है। -
(i) 14 वर्ष की अवस्था तक के सभी बच्चों को स्कुल में नामांकित व
(ii) शिक्षा की गुणवत्ता में अधिक से अधिक सुधार। पूरे देश में Pri. Edu. की समस्या को सुधारने के लिए (ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड) का अभियान शुरू किया जाए।

3. **माध्यमिक शिक्षा :-** इसके अंतर्गत एक आदर्श नागरिक के निर्माण के लिए Secondry ह अतिमहत्वपूर्ण है। इसलिए माध्यमिक स्तर पर शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए नवोदय विद्यालय की स्थापना की गई। जिससे हर क्षेत्र के प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं को शिक्षा प्रदान कि जाए।

Scanned with CamScanner

4. उच्च शिक्षा :- Higher Education में मेधावी छात्रों को ही प्रधान की जाएगी। विश्वविद्यालय में शोध कार्य पर बल दिया जाएगा। इसके अतिरिक्त कृषि, चिकित्सा, विधि (Law) तकनीकि तथा व्यवसायिक क्षेत्रों में नवीन पाठ्यक्रम लागु किया जायेगा।

5. ग्रामीण विश्वविद्यालय :- राष्ट्रीय शिक्षा निति 1986 के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को शिक्षा देने के लिए ग्रामीण विश्वविद्यालय खोलने का प्रावधान किया गया। जिसमें महात्मा गाँधी की Basic Edu के सिद्धांतों को मान्यता मिलेगी। देश का प्रथम ग्रामीण वि० वि० की स्थापना 26 जनवरी 2005 में चित्रकूट में नाना जी देशमुख ने किया।

6. शिक्षक शिक्षा :- इसके अंतर्गत देश के शिक्षकों को नयी-नयी जानकारी एवं शोध को करने का अवसर दिया जाए। जिससे शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार किया जाए। जिससे भविष्य में भी शिक्षा प्रदान करने में आने वाली कठिनाइयों से बचा जाए।

7. तकनिकि एंव प्रबंधन कि शिक्षा :- इसके अंतर्गत ~~क~~ ऐसे शिक्षण संस्थान खोले जाए जिससे मानव और मानव द्वारा बनाए यंत्रों से अधिक से अधिक लाभ उठाया जा सके।
वहीं प्रबंधन शिक्षा में मानवीय क्रियाओं के संचालन के लिए प्रबंधन कि आवश्यक्ता होती है, जो प्रबंधन शिक्षा से प्राप्त होगा।

निष्कर्ष :- इस प्रकार National Policy of Education 1986, अंधकार में प्रकाश कि किरण है। लेकिन नैतिक्ता के आभाव में इसका विकास नहीं हो पाया। इसमें ~~नैतिक शिक्षा के विकास में व्यापक~~ विषय साथ ही सांस्कृतिक संरक्षण पर भी बल दिया यदि इसे पूर्ण रूप से लागु किया जाए तो देश कि शिक्षा में अधिकार बदलाव लाया जा सकता है। तथा ~~Globalwarming~~ Globlization भूमंडलीकरण के युग में हम अपनी पहचान बनाए रखते हुए, विश्व के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल सकते है

The End
☺

Pg-1 B.Ed 1st Year
C-5

नयी शिक्षा नीति - 1992 OR प्रोग्राम ऑफ एक्शन 1992]

Introduction:- राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 1986 को जब 8 MAY 1986 में लोक सभा में पारित किया गया तो अगस्त 1986 में ही यह योजना बनाई गई कि इस शिक्षा नीति की हर साल समिक्षा कि जाए एवं आवश्यकता पड़ने पर इसमें संशोधन किया जाए। जब विश्वनाथ प्रतापसिंह प्रधानमंत्री बने तो इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति कि समीक्षा के लिए 7 MAY 1990 को आचार्य राममुर्ति की अध्यक्षता में एक समिति कि घोषणा कि इसने अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जिसमें कुछ अमुल्य सुझाव एवं परिवर्तन की सिफारिश की गई।

अतः राष्ट्रीय शिक्षा निति 1986 का ही संशोधित रूप नयी शिक्षा निति - 1992 है। जिसे प्रोग्राम ऑफ एक्शन 1992 भी कहा जाता है।

नयी शिक्षा नीति 1992 में दिये गये सुझाव :- नई शिक्षा नीति - 1992 के अंतर्गत कुछ बहुमूल्य सुझाव एवं परिवर्तन की सिफारिश (अनुशंसा) की गई। जिसमें निम्नलिखित सुझाव है। :-

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति के कार्यों की समीक्षा के लिए बनाई गई राष्ट्रीय मुल्यांकन समिति [National Policy on Education Review Committee (N.P.E.R.C)] के सहयोग से प्रोग्राम ऑफ एक्शन को निर्धारित किया जाए।
2. केंद्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड [Central Advisory Board of Education (C.A.B.E)] राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय समिति बनायी जायगी, जो SC, ST के देख-रेख में एक राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय समिति बनायी जायगी, जो SC, ST की शिक्षा पर नजर रखेगी।
3. प्रत्येक शहर में एक नवोदय विद्यालय की स्थापना करना। जिसमें SC/ST के छात्रों को विशेष सुविधाएँ प्राप्त हो।
4. शिक्षा को सर्वभौमिक बनाने के लिए अनिवार्य किया जाना चाहिए।
5. व्यवसायिक शिक्षा को बारहवीं कक्षा के साथ-साथ नौवीं कक्षा से ही संलग्न किया जाना चाहिए।
6. प्रत्येक विद्यालयों में कम्प्यूटर की शिक्षा दी जानी चाहिए।
7. अखिल भारतीय तकनीकि शिक्षा परिषद [All India Council for Technical Edu.] में संशोधन कर इसे और सुदृढ़ बनाया जाए।
8. बालकों के बस्ता (Bag) से किताब का बोझ कम किया जाना चाहिए।

P.T.O → Pg-2

Q. राष्ट्रीय शिक्षा नीति को इतिहास एवं विशेषता बताएं तथा प्रोग्राम ऑफ एक्शन क्या है संक्षेप में बताएं।
Q. नयी शिक्षा नीति क्या है, कब इसे बनाया गया तथा इसके क्या सुझाव दिये गये।

9. गांधीजी के विचार धाराओं के आधार पर ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा प्रारंभ की जाना चाहिए।

10. अलग-अलग क्षेत्रों में U.G.C [University Grants Commission (विश्वविद्यालय - अनुदान आयोग)] की क्षेत्रीय कार्यालय की प्रत्येक क्षेत्र अथवा राज्यों में स्थापित की जानी चाहिए।

11. विद्यालय में पिछड़े हुए एवं व्यवसायी से जुड़े हुए छात्रों को शिक्षा से जोड़ने के लिए IGNOU [Indira Gandhi National Open University] एवं NIOS [National Institute of Open Schooling (राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान)] का विस्तार किया जाना चाहिए।

Note- IGNOU & NIOS ऐसे शिक्षण संस्थान है जो class नहीं चलाते, इसमें वे लोग नामांकन ले सकते है जो Job में या कोई व्यवसाय से जुड़े है और उनके पास इतना Time नहीं है कि नियमित classes कर सकें।

NIOS, IGNOU में नामांकन कराने के बाद वहीं से सारी पुस्तके उपलब्ध करादी जाती है। केवल परीक्षा के समय छात्रको उपस्थित होना पड़ता है। परीक्षा उत्तीर्ण होने पर उसे सभी प्रकार के प्रमाण पत्र दिये जाते है जो हर जगह मान्य होती है।

पढ़ाई भी हो गयी और Job या व्यवसाय छोड़ना भी नहीं पड़ा।

12. शिक्षकों को पुर्णरूप से प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

13. प्राथमिक विद्यालय (Primary School) में महिला शिक्षक की नियुक्ति को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

14. विद्यालयों के संचालन एवं कार्यों के ~~निरीक्षण~~ जाँच व निरीक्षण के लिए स्थानीय समिति का गठन किया जाना चाहिए।

15.

Scanned with CamScanner